भूषण

कवि परिचय :– रीतिकाल में जिन रचनाकारों ने श्रृंगार के अतिरिक्त अन्य रसो एवं प्रवृत्तियों को काव्य–सृजन का आधार बनाया, उनमें महाकवि भूषण अग्रगण्य हैं। उन्होनें भारतीय संस्कृति के महान रक्षक शिवाजी और छत्रसाल की वीरता का ओजस्वी वर्णन करके हिंदी कविता की श्रीवृद्धि की।

भूषण कानपुर जिले के तिकवाँपुर गाँव के निवासी रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1613ई0 में हुआ था। प्रसिद्ध कवि चिंतामणि और मतिराम इनके भाई कहे जाते हैं। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार इनका नाम घनश्याम था। इनको भूषण की उपाधि चित्रकुट के राजा रूद्र सोलंकी से मिली थी परंतु अब इनका नाम भूषण ही काव्य जगत में प्रसिद्ध है।

भूषण अनेक राजाओं के आश्रय में रहे किन्तु इन्हें दो वीरों के आश्रय में रहने से ही विशेष मान मिला। वे थे महाराज शिवाजी और वीर छत्रसाल। उन्होनें औरंगजेब की नीतियों का विरोध कर उससे अनेक युद्ध किए थे। ऐसे महावीरों को चरितनायक बनाकर भूषण ने कविता को सार्थक किया। कहते हैं, महाराज छत्रसाल ने इन्हें सम्मान देने के लिए इनकी पालकी में कंधा लगाया था, तभी भूषण ने कहा था– **सिवा कौ बखानों कै बखानों छत्रसाल कौ।** इनका निधन सन् 1715 ई0 में हुआ माना जाता है।

काव्य परिचयः–

भूषण के तीन काव्य–ग्रंथ प्राप्त है– शिवराजभूषण, शिवाबावनी और छत्रसाल दशक।

भूषण की कविता ब्रजभाषा में हैं। शिवाजी और छत्रसाल का शौर्यवर्णन उनके काव्य का मुख्य विषय है। शिवाजी की युद्धवीरता, दानशीलता, दयालुता, धर्मवीरता, आदि का सजीव वर्णन ओजस्वी वाणी में इन्होनें किया है। इसी कारण भूषण वीररस के प्रथम कोटि के कवि माने जाते हैं।

अपनी कविता में भूषण ने ऐतिहासिक घटनाओं को बराबर ध्यान में रखा है जिससे वर्णनों की प्रामाणिकता असंदिग्ध है। उन्होंने अरबी, फारसी, शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। शब्दो को तुक मिलाने या प्रभाव पैदा करने के लिए तोडा–मरोडा भी खूब है। अनेक स्थलों पर व्याकरण के नियमों की भी चिंता नहीं की है। फिर भी वीर भावनाओं को उद्बुद्व करने की उनमें अद्भुत क्षमता है। भूषण का काव्य वीररस का पर्याय बन गया है।

पाठ संकेत

प्रस्तुत संकलन में भूषण के 5 छंदो मे शिवाजी की वीरता वर्णित है। 5 छंद छत्रसाल की प्रशंसा से सम्बद्ध हैं शिवाजी की वीरता की परम्परा रूढ वर्णन प्रारम्भ के दो छंदो में हैं । इनमें शिवाजी के आंतक से पीडित शत्रु–नारियों की दुर्दशा चित्रित है। शिवाजी की विजय एवं औरगजेब आदि के शत्रुओं मानभंग कावर्णन है। तथा औरंगजेब के सेनापतियों का भय वर्णित है।

शिवाजी की वीरता, युद्धवीरता, औरंगजेब के मन में शिवाजी के भय का सजीव वर्णन है। पांचवे छंद में शिवाजी को भारतीय संस्कृति के महान रक्षक के रूप में चित्रित किया गया है।

छत्रसाल विषय छंदों में प्रथम में छत्रसाल के आक्रमण , द्वितीय में उनकी महिमा, तृतीय में युद्धवीरता चतुर्थ में उनकी बरछी एवं पंचम में उनके प्रताप का औजस्वी वर्णन है।

शिवाजी का शौर्य

ऊँचे घोर मंदर के अंदर रहनवारी,
ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहाती है।

OPTIONAL HINDI (CLASS-11)

कंदमूल भोग करैं, कन्दमूल भोग करें,
तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती है।।
भूषन सिथिल अंग भूषन सिथिल अंग,
बिजन डुलाती ते वै बिजन डुलाती है।
भूषन भनत सिवराज वीर तेरे त्रास,
नगन जडाती ते वै नगन जडाती है।।1।।
गढन गँजाय गढधरन सजाय करि,
छाँडि केते धरम दुवार दै भिखारी से।
साहि के सपूत पूत वीर सिवराज सिंह,
केते गढधारी किये वन वनचारी से।।
भूषन बखानै केते दीन्हें बन्दीखानेसेख,
सैयद हजारी गहे रैयत बजारी से।
महतो से मुगल महाजन से महाराज,
डाँडि लीन्हें पकरि पठान पटवारी से।।2।।
दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी,
उग्ग नाचे उग्ग पर रूण्ड मुँड फरके।
भूषन भनत बाज जीति के नगारे भारे,
सारे करनाटी भूप सिंहल लौं सरके।।
मारे सुनि सुभट पनारेवाले उद्भट,
तारे लागे फिरन सितारे गढधर के।
बीजापुर वीरन के , गोकुण्डा धीरन के ,
दिल्ली उर मीरन के दाडिम से दरके।।3।।
अंदर ते निकसीं न मंदिर को देख्यों द्वार,
बिन रथ पथ ते उघारे पाँव जाती है।
हवा हू न लागती ते हवा ते बिहाल भई,
लाखन की भीरि में सम्हारती न छाती है।।
भूषन भनत सिवराज तेरी धाक सुनि,
हयादारी चीर फारि मन झुंझलाती है।
ऐसी परीं नरम हरम बादसाहन की ,
नसपाती खातीं ते वनासपाती खाती है।।4।।
बेद राखे विदित पुरान परसिद्व राखे,
रामनाम राख्यों अति रसना सुधर में।
हिंदुन की चोटी राखी है सिपाहिन की ,

OPTIONAL HINDI (CLASS-11)

काँधे में जनेऊ राख्यों माला राखी गर में।
मीडि राखे मुगल मरोडि राखे पातसाहि,
बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में।
राजन की हद्द राखी तेगबल सिवराज,
देवराखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में।।5।।

व्याख्या– कवि वर्णन करता है कि औरंगजेब जैसे बादशाहों ने हिन्दू धर्म को मिटाने का प्रयत्न किया था। शिवाजी ने हिन्दू संस्कृति की रक्षा की। उन्होनें बेदों और प्रसिद्व पुराणों की रक्षा की ,मुगलों के द्वारा उन्हें नष्ट करने से बचाया। लोग राम रटने से डरते थें। शिवाजी ने उनहें निर्भय बनाया। लोग बिना विघ्न बाधा के रामनाम का उच्चारण, जप करने लगे। मुसलमान बादशाह हिन्दुओं को मुसलमान भी बनाते थे, हिन्दुओं की चोटी कटवा देते , जनेऊ उतरवा देते थे। शिवाजी ने अपने पराक्रम से मुसलमान शासकों पर अंकुश लगाकर हिन्दुओं की चोटी की रक्षा की। उन्होनी सिपाहियों की रोजी–रोटी बचाई। लोग अपने कधें पर जनेऊ पहने रह सकते थे। शिवाजी के कारण ऐसा करने में उन्हें डर नहीं लगता था। शिवाजी ने मुगलों को दबाकर रखा ,बादशाहों को मरोड दिया, शत्रुओं को जैसे पीस ही डाला। भाव यह है कि वीर शिवाजी ने हिन्दुओं के जो भी शत्रु थे उन पर नियंत्रण स्थापित किया। जिससे हिन्दु अपने धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन कर सके। लोग अपने गले में माला धारण कर सके। शिवाजी जरूरतमंद को दान देते, उसकी सहायता कर देते थे जो उनके वरदान स्वरूप थी। शिवाजी ने राजाओं को उनकी मर्यादा में रखा, उनकी मनमानी पर अंकुश लगाया। यह सब शिवाजी ने अपनी तलवार के बल पर किया। मुसलमान शासक हिन्दुओं के देवालयों को नष्ट करते थे, उन्हें शिवाजी ने बचाया और लोग देवालयों में अपने देवताओं की आराधना कर सकें। इस प्रकार लोग शिवाजी के कारण अपने घर निश्चित भाव से अपने अपने धर्म का पालन कर सके।

छत्रसाल की वीरता

रैयाराव चंपति को चढो छत्रसाल सिंह भूषण भनत गजराज जोम जमके।
भादौ की घटा सी उडि गरद गगन घिरें सेलैंसमसेरै फिरे दामिनि सी दमके।
खान उमरावन के आन राजारावन के सुनि सुनि उर आगैं घन कैसे घमके।
बैयर बगारन की अरिके अगारन की लाँघती पगारन नगारन के धमे।।1।।

कठिन शब्दार्थ:– रैयाराव चंपति–रैयाराव,चंपति राय,छत्रसाल के पिताजी का नाम । भनत –कहते है । गजराज –श्रेष्ठ हाथी। जोम –उत्साह, उमंग, जोश। गरद–धूल। सेलैं–बरछियाँ, भाले। समसेरैं–तलवारे। दामिनि–बिजली। दमके– चमके। आन–अन्य। उर–हद्‌य। घन–हथौडां। घमके–चोट लगी, दहल उठे। बैयट–घाटियों। अगारन–घरों। पगारन–परकोटों।

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यावतरण भूषण द्वारा रचित छत्रसाल की वीरता शीर्षक वर्णन से लिया गया है। इनमें छत्रसाल की वीरता और शत्रुओं पर हुई उसकी प्रतिक्रिया के बारे में बतलाया गया है।

व्याख्या – कवि कहता है कि रैयाराव चम्पतिराय के पुत्र छत्रसाल सिंह ने शत्रु पर आक्रमण किया तो सेना के विशालकाय हाथी उत्साह से जमे हुए थे। सेना के चलने से उडी धूल, भादौं मास की बादल की घटा की तरह आकाश में छा गई। योद्वाओं के हाथों मे स्थित भाले और तलवारें उस घटा में चमकती बिजली जैसी प्रतीत हो रही थी। छत्रसाल के नगाडों की ध्वनि मुगल सेना के खानो, सरदारों, राजाओं और रावों के हद्‌यों पर, घन की चोटें सी लग रही थी। नगाडों की धमक को सुनकर शत्रुओं के घरों की स्त्रियाँ, परकोटों को लाँघती हुई भागी जा रही थी।

OPTIONAL HINDI (CLAS-11)

चाकचकचमू के अचाकचक चहूँ ओर, चाक सी फिरति धाक चंपति के लाल की ।
भूषन भनत पातसाही मारि जेर कीन्ही, काहू उमराव ना करेरी करवाल की ।
सुनि सुनि रीति बिरूदैत के बडप्पन की , थप्पन उथप्पन की बानि छत्रसाल की।
जंग जीतिलेवा तेऊ ह्वै कै दामदेवा भूप, सेवा लागे करन महेवा महिपाल की।।2।।

कठिन शब्दार्थः— चाकचक—चारों ओर से सुरक्षित ,मजबूत। चमू—सेना।अचाकचक— असुरक्षित, फैलकर। चाक—मिट्‌टी के बर्तन बनाने का कुम्हार का चक्र।पातसाह—बादशाह। जेर —परास्त। करेरी—मजबूत करना। करवाल—तलवार। विरूद—यश। थप्पन—स्थापना। उथप्पन—उखाडने का काम, उजाडना। वानि—आदत। करेरी—कठोर। जीतिलेवा— जीत लेने वाले। तेऊ—वे भी। जंग—युद्व। हैके— होकर। दामदेवा —रूपया, कर देने वाला।

प्रसंग— प्रस्तुत पद्यावतरण भूषण द्वारा रचित छत्रसाल की वीरता शीर्षक वर्णन से लिया गया है। छत्रसाल ने अपने आक्रमण से शत्रुओं की हालत खराब कर दी थी। इसी का वर्णन यहां किया गया है।

व्याख्या — भूषण वर्णन करते हैं कि जो शत्रु चारों ओर से सुरक्षित रहकर स्वयं को मजबूत समझते थे। वे भी यकायक असुरक्षित हो गये। उन पर चम्पतिराय के पुत्र छत्रसाल की धाक बैठ गई। कुम्हार का चक्र जैसे घूमता है उसी प्रकार उनके चारों ओर छत्रसाल की धाक फैल गई।छत्रसाल की वीरता की चर्चा होने लगी। छत्रसाल की तलवार का कोई उमराव कडाई से सामना न कर सका। सभी शत्रुओं एवं बादशाहों ने यशस्वी छत्रसाल के बडप्पन , उसकी ख्याति के बारे मे सुना। उन्हें ज्ञात हुआ कि छत्रसाल स्थापित राजाओं को भी उखाड डालने वाला है। उन्हें उखाड डालना उसकी आदत है। जो बादशाह, उमराव आदि युद्व में जीता करते थें, वे सभी सब राजा छत्रसाल का करदाता बनकर उनकी सेवा करने लगे। केवल युद्व में वीरता से ही नहीं अपितू विख्यात योद्वा छत्रसाल के बडप्पन या उदारता ने भी लोगों का मन जीत लिया है। छत्रसाल की छोटे राजाओं को स्थापित करने और उनका उत्थान करने को नीति (स्वभाव) ने, युद्व में विजयी होने वाले राजाओं को भी वश में कर लिया है। वे पराक्रमी राजा भी महराजा छत्रसाल को भेंट(कर, धन) देकर उनकी सेवा करने लगे हैं।

अस्त्रगहि छत्रसाल खिभयो खेत बेतवै के , उत तें पठानन हूँ कीन्ही झुकि झपटैं।
हिम्मति बडी कै कबडी क खेलवारन लौं, देत सै हजारन हजार बार चपटैं।
भूषन भनत काली हुलसी असीसन कौं, सीसन कौं ईस की जमाति जारे जपटैं।
समद लौं समद की सेना त्यों बुँदेलन की सेलैं समसेरैं भई बाडव की लपटै।।3।।

कठिन शब्दार्थः— अस्त्रगहि—हथियार पकडकर। खिभयों— क्रुद्व हुआ। खेत—क्षेत्र, रण क्षेत्र। पठानन— पठानों ने। खेलवारन—खेलने वालों । लौं —समान। कबडी—कबड्‌डी खेल। चपटैं— चोट। जमाति— वर्ग, समूह। जपटै— झपटती है। समुद्र लौं—समुद्व के समान। समद— अब्दुस्समद, एक नाम । सेलैं— बरछी, भाले। समसेरैं —तलवारे। बाडव—बडवाग्नि, समुद्र की आग।

प्रसग— प्रस्तुत पद्यावतरण भूषण द्वारा रचित छत्रसाल की वीरता शीर्षक वर्णन से लिया गया है। यहां छत्रसाल के तलवार लेकर लडने के बारे में वर्णन यिका गया है। उसकी वीरता देखकर काली देवी आदि उसे आशीर्वाद देने उद्यत हुई। बुंदेले छत्रसाल की सेना की तलवारें समुद्र की आग की लपटों जैसी प्रतीत होती है।

व्याख्या — भूषण वर्णन करते है कि बेतवा के युद्व में छत्रसाल ने अस्त्र —शस्त्र लेकर और क्रोधित होकर पठानों पर आक्रमण कर दिया। उधर पठान सेना ने भी, अवसर पाकर छत्रसाल की सेना पर झपट्‌टे मारे। छत्रसाल के बडे साहसी सैनिकों ने कबडडी के खिलाडियों की भांति, सौ हजार (एकलाख) शत्रु सैनिकों के बीच घुसकर हजारों बार प्रहार किए। कवि भूषण कहते है —छत्रसाल और उसके सैनिकों की वीरता से मारे गए शत्रुओं की संख्या देखकर महाकाली आशीर्वाद देन को प्रसन्न हो गई और काली के साथ आए शिव के गण कटे पडे सैनिकों के सिरों को पाने के लिए आपस में जोर दिखाने लगे और सिरों को झपटने में लगे हुए थे। पठान सरदार अब्दुस्समद की सेना यदि समुद्र के समान विशाल थी तो छत्रसाल के वीर बुंदेलों के भाले ओर तलवारे की बड्वाग्नि की लपटें बन गए थें जो समुद्र के जल को जला देती है।

भुज—भुजनेस की बैसंगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खाती दीह दारून दलन के।
ब्खतर पाखरन बीच धँसि जाति मीन पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के।
रैयाराव चंपति के छत्रसाल महाराज भूषन सकै करि बखान को बलन के।
पच्छी पर छीने ऐसे परे परछीने बीर तेरी बरछी ने बर छीने है खलन के।।4।।

कठिन शब्दार्थः— भुज— भुजा, बांह। भुजनेस—सर्प। बैसंगिनी—आजीवन साथ रहने वाला। भुजंगिनी— सर्पिणी। खेदि—खेदि—खदेड खदेडकर, घेर घेर कर। दहि—दीर्घ ,बडा। दारून—भयकर। दलन— दलों , सेनाओं। बखतर—कवच।

OPTIONAL HINDI (CLASS-11)

पाखर–हाथियों की लोहे से बनी झूल जो शस्त्रों से रक्षा करती थी।मीन–मछली। पैरि–तैरकर। परबाह– प्रवाह, धारा। बखान–वर्णन। बल–पराक्रम। पच्छी–पक्षी। पर छीने– पंख कटे हुए। परछीने–क्षीण होकर, कटें अंगों वाले होकर। वरछीन–एक हाथ में लेकर चलाए जाने वाले हथियार। वरछीने –बल छीन लिए, बलहीन या मृत बना दिया। खलन के – दुष्टों या शत्रुओं के।

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यावतरण भूषण द्वारा रचित छत्रसाल की वीरता शीर्षक वर्णन से लिया गया है। यहां छत्रसाल के बरछी चलाने के कौशल और परिणाम का वर्णन किया गया है।

व्याख्या – हे महाराज चंपतिराय के सुपुत्र वीर छत्रसाल! आपकी बरछी आपकी भुजारूपी सर्प की जीवनसंगिनी सर्पिणी के समान है। यह भंयकर शत्रु सेनाओं को घेर घेर कर उन्हें खाती या डसती रहती है। यह बरछी शत्रु सैनिकों द्वारा पहने हुए कवचों और हाथियों की रक्षा के लिए डाली गई झूलों में उसी प्रकार फँसती चली जाती है जैसे मछली जल के प्रवाह को चीरती हुई तैरकर पार निकल जाती है। आपके पराक्रम का वर्णन भला कौन कर सकता है। आपकी बरछी ने शत्रु सैनिकों के सारे बल छीन लिए है, उन्हें बलहीन या मृत बना दिया है। य सैनिक रण भूमि में परकटे हुए पक्षियों के समान कटे अंगो वाले होकर पडे हैं या परकटे पक्षियों के समान लडने मे असमर्थ होकर रणभूमि में पडे हुए है।

राजत अखंड तेज छाजत सुजस बडो, गाजत गयंद गिग्गजन हिय साल को।
जाहि के प्रताप सों मलीन आफताब होत, ताप तजि दुज्जन करत बहुत ख्याल को।
साज– सजिगज तरी पैदर कतार दीन्हे, भूषन भनत ऐसो दीनप्रतिपाल को।
आन रावराजा एक मन में न लाउँ अब, साहू को सराहों के सराहौं छत्रसाल को।।5।।

कठिन शब्दार्थः– राजत–शोभा पा रहा है। अखंड– निरंतर। छाजत–छाया हुआ। सुजस– सुंदर यश। गाजत– गरजते हैं। गयंद– हाथी। दिग्गजन– दिशाओं में स्थित कल्पित हाथियों कें। हिद– हृदय। साल को – सालने को, पीडित करने को। जाहिके– जिसके। मलीन –तेजहीन। आफताब– सूर्य। ताप–क्रोध, घमंड। तजि– त्याग कर । दुज्जन– दुष्ट व्यक्ति। ख्याल–विचार, सोचना–समझना। साजि–सजाकर। गज–हाथी। तूरी–घोडे। पैदर–पैदल, सेवक। कतार–पंक्ति। दीन प्रतिपाल–दीन व्यक्तियों का पालनकर्त्ता। आन–अन्य, दूसरे। राव–छोटे राजा, सामंत। साहू–शिवाजी। सराहौं–प्रशंसा करूगाँ।

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यावतरण भूषण द्वारा रचित छत्रसाल की वीरता शीर्षक वर्णन से लिया गया है। कवि इस छंद में राजा छत्रसाल के प्रताप,वैभव, तथा दानशीलता आदि गुणों का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या – कवि भूषण कहते है कि महाराज छत्रसाल का तेजस्वी स्वरूप निरंतर सुशोभित रहता ह। उनका सुयश चारों ओर छाया हुआ है। उनके द्वार पर श्रेष्ठ हाथी गर्जन करते कहते हैं । इनकी गर्जना सुनकर पृथ्वी का भार उठाने वाले चारों दिशाओं के हाथी भी लज्जित होते हैं ।छत्रसाल के प्रताप (तेज) के सामने सूर्य भी कान्तिहीन हो जाता है और दुष्ट तथा आततायी लोग मन ही मन उनसे भय खाया करते हैं। महाराज छत्रसाल बडे उदार हृदय दानी है। उन्होंने साज से सज्जित करके हाथी, घोडे और पैदलों (सैनिक या सेवक) की पंक्तियाँ दान की है। इनके जैसा निर्धनों और दुखियों का रक्षक कोई और नहीं दिखाई देता । भूषण कहते है कि अब किसी अनय राव या राजा को वह मन में भी नहीं ला सकते। अब तो वह यह नहीं समझ पा रहे है कि वह शिवाजी महाराज की दानशीलता और प्रताप की प्रशंसा करें या वीर छत्रसाल के गुणों की प्रशंसा करे। दोनो ही एक दूसरे से बढकर प्रतीत होते है।

OPTIONAL HINDI (CLASS-11)